यशपाल की कहानियाँ और नारी समस्या

श्री. अमोल ज्ञानोबा लांडगे
शोध छात्र, लातूर.

आज के इस आधुनिक युग में सबसे महत्वपूर्ण माँगो में एक आवश्यक माँग यह है कि नारी के उत्कर्ष को पर्याप्त समय दें। इसके लिए सफल प्रयास किए जाए।

समाज परायण लोग नारी शक्ति को प्रोत्साहित करने उन्हे अग्रगामी बनाने का प्रयास करते हैं; लेकिन नारी समस्या को सुलझाने की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता।

आज के इस आधुनिक युग में नारी समस्याओं में प्रायः यही देखने को मिलता है कि, कितनी ही अवांछनीय प्रवृत्तियाँ, अगणित कुरीतियाँ, मूढ़ताएँ, अन्धमान्यताएँ परम्परा के रूप में मान्य हो रही है। और यह दुष्प्रवृत्तियाँ समाज में स्वीकार्य हो जाती है और स्वीकार्य ही नहीं प्रिय भी लगने लगती है।

कालान्तर में वे सामान्य व्यवहार जैसी लगने लगती है। कुछ ऐसा-ही विचित्र घटनाक्रम आज के शिक्षित और आधुनिक समाज में नारी के साथ घठित होता हैं इसी को यशपालजी अपने कहानीयों के माध्यम से मार्क्सवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे है।

यशपाल की बहोत-सी कहानियाँ नारी जीवन की समस्या पर आधारित है। नारी का पराधीन जीवन और शोषण इन मुद्दों को मार्मीक रुप से प्रस्तुत किया है।

आदिम काल से नारी शोषित जीवन ज्ञापन कर रही है। और आज भी पुरूष वर्ग उसे इसी रूप में देखना चाहता है। नारी पारधिनता का प्रमुख कारण यह है कि वह आर्थिक रुप से सशक्त नहीं है। नारी को आर्थिक रुप से पुरुष वर्ग पर निर्भर रहना पड़ता है।

यशपाल के कहानियों में नारी की समस्या उच्च तथा निम्न वर्ग में विभाजित होकर प्रस्तुत हुई है। समाज की मध्यमवर्ग और निम्नवर्ग की नारी अधिक शोषित होती हुई दिखाई देती है। 'पराई','दुसरी नाक', 'अपनी चीज', 'रिजक', 'दर्पण', 'जबरदस्ती', 'कलिया नारी', आदि कहानियों में नारी की पराधिनता और शोषण को प्रस्तुत किया है। प्रेम और काम की भावना के मूल में नारी को भोग्य वस्तु के रूप में देखा जाता है, उसपर एकाधिकार की भावना लादकर उसे स्वतंत्रता से वंचित किया जाता है।

पराई कहानी में यह स्तर प्रधान रूप में दिखाई देता है। पुरन विवाह के पूर्व रख्खी पर जी जान से प्रेम करता है। उसे मिलने के लिए तरसता है। लेकिन विवाह के बाद पुरन के मनोभाव बदल जाते है, वह रख्खी पर अधिकार जमाने लगता हे। इससे रख्खी को आत्मनिर्णय का, स्वतंत्र आचार विचार का कोई अधिकार नहीं रहता। दुसरी नाक कहानी में नारी पर पुरानों का एकाधिकार की भावना और नारी विवशता को प्रकट किया है। जब्बार अपनी पत्नि की सुंदरता के कारण उसकी नाक काट देता है ताकि दूसरे उसकी पत्नी को ललचाई दृष्टि से न देखें।

कलिया नारी और पराई कहानी का स्वर एक जैसा है। नंदो विवाह के पश्चात अनुभव करती है कि वह कली गई है।उसका पती उसे अपनी ही संपत्ति समझकर उसको दासी के रुप में देखता है। विवाह के पहले ही दिन पती की निर्दयता और कटू व्यवहार उसके सारे स्वप्नों को तोड देता है। पती के अत्याचार जब बढने लगते है तो वह आत्महत्या के लिए मजबूर होती है। पुरूष के एकाधिकार और अत्याचार नारी को किस तरह जीवन जीने से वंचीत करते हे। पुरूष वर्ग नारी का शोषण किसी-न-किसी तरह करता रहता है। इसी को यशपाल जी प्रस्तुत करना चाहते है। पुरूष प्रधान सामाजिक विधान में विवाहीत नारी का अस्तित्व नगण्य है। नारी को पुरूष पर अवलंबित रहना पडता है। यशपाल जी की कहानियों में प्रेम त्रिकोण की समस्या को भी चित्रित किया है।

एक ओर वह अपने पती से निष्ठावान है तो दूसरी ओर प्रेमी का प्रेम भी चाहती है। इसके मूल में यौन भावना का प्राबल्य ही प्रमुख है। यही प्राबल्य पती-पत्नी के बीच कलह, संघर्ष, पारस्परिक द्वेष को जन्म देता है। पारस्पारिक संतुष्टि के अभाव में वे उस साधन को अपनाते है । 'जहाँ हसद नही' तिसरी चिता, अपनी चिज, आदि कहानियाँ है। जहाँ हसद नहीं की सआदत पति के प्रति प्रेम होते हुए भी हबीब के प्रति आकर्षित होती है। तिसरी चिता में माला, जयदेव और उसके प्रेमी की समस्या का चित्रण किया है। माला को जयदेव शक की दृष्टि से देखता है और उसका प्रेम घृणा में बदल जाता है। लेकिन माला एक भीषण आग में जयदेव की रक्षा करती हुई सिध्द करती है, कि वह पति से एकनिष्ठ थी यशपाल की कुछ कहानियाँ ऐसी है जिसमें पुरूष दुसरों की पत्नीयों से खिलवाड करना चाहता है । उन्हे केवल काम भावना की दृष्टि से देखना चाहता है। अस्सी बटा सौ कहानी में युवकों का झुन्ड बाजार में आती-जाती युवतीयों पर पसंतियाँ कस रहा हैं। नजदीक आती युवतियों का नाम - ७५/१००, ७०/१००, ८०/१०० के हिसाब से लगा रहे हे। पाँव तले की डाल कहानी में नारी को भोग्या रुप में अंकित किया है। सामाजिक रुढ़ी-परम्पराओं पर करारा व्यंग्य किया है।

ब्रजनन्दन जब अपने मित्र माथुर के साथ मनोरंजन पाना चाहता है तब सामने ब्रजनन्दन की बहन निकलती है। ब्रजनन्दन को ग्लानी होती है। माथुर कहते है किं - सभी औरते किसी-न-किी की बहन-बेटी या स्त्री होती है। इसलिए ''पाँवतले की डाल काटना तो रोने से क्या लाभ''। पुरुषों का ऐसा वर्ग है जो दुसरों की स्त्री के साथ चाहे कुछभी कर सके, उसमे उसे अपमान या लज्जा अनुभव नहीं होती। लेकिन अपनी बहन या बेटी के साथ यदि कोई वह काम करे तो उसके लिए मानो पहाड़ टूट जाता है। समाज के इसी विकृतियों को दिखाने का प्रयास यशपालजी करते है।

यशपाल की कहानियों में नारी की विभिन्न समस्याओं के साथ-साथ अनमेल विवाह की समस्याओं का चित्रण किया है और इसी अनमेल विवाह के भीतर से अनगिणत समस्या जन्म लेती हुई दिखाई दे रही है। अनमेल विवाह के मूल में दहेज प्रथा मूल कारण है। आर्थिक दृष्टि से मजबूर वधुपिता अपनी लड़की का विवाह किसी भी उम्रवाले व्यक्ति के साथ कर देता है। इस कारण नवयुवती कुंठित हो जाती है उसकी इच्छा,आशा,आकांक्षा का दमन किया जाता है। तुमने क्यों कहा था मैं सुंदर हुँ में माया के कुंठित जीवन का चित्रण है। माया का विवाह बुढ़े वकील से किया गया है। वह बुढ़े वकील की तिसरी पत्नी है उसकी गोद सुनी होने के बावजुद वह चार बच्चों की माँ है। माया का जीवन सहज स्वाभाविक काम वासनाओं की तृप्ति से वंचित होने के कारण कुंठाग्रस्त बन जाती है। औरत कहानी में रितिया की स्थिती माया जैसी है वह बुढ़े पतिको छोडकर भाग आती है और भोला जो नोकर है उसके साथ प्रेम संबंध स्थपित करती है।

यशपालजी यही कहना चाहते है कि वृध्द तो युवती से विवाह कर सकता है लेकिन युवती अनेक कुंठाओं का शिकार बन जाती है। वह अन्यत्र योन-तृप्ति से समाधान पाने की कोशिश करती है।

विवाहित नारियों के साथ-साथ अविवाहित नारी समस्या को भी प्रस्तुत किया है। यौन भावना के दमन से मानसिक विकृतियाँ जन्म लेती है इसका दमन करना प्रकृति के विरूध्द है। प्रायश्चित, उत्तमी की माँ, जिम्मेदारी,निर्वासिता आदि में इस समस्या को वर्णित किया है। निर्वासिता में इन्दु सक्सेना कुरुप होने के कारण विवाह से वंचित होती है। स्वाभाविक उसके मन में संतान की भावना जाग्रत होती है। भावना को वह दबा नहीं पाती है। जब वह एक होटल मे ठहरती है, तब मॅनेजर और नौकर इन्दु को तुरन्त होटेल से निकाल हेते है। जिम्मेदारी कहानी में एक मध्यमवर्गीय शिक्षित युवती के कुण्ठित भावनाओं को स्पष्ट किया है। प्रभा बी.ए.पास हो जाती है, लेकिन विवाह की परीक्षा में फेल हैती है। विवाह न होने के कारण उसके मन मे मानसिक घुटन पैदा होती है। नौकरी करती है। सेना में चेकाई पद पर नियुक्त की जाती है। शिलांग में कैप्टन बोस से प्यार करने लगती है लेकिन कैप्टन बोस उससे सिर्फ मित्रता करता है तो वह फिर कुण्ठाग्रस्त बन जाती हे। प्रायश्चित, उत्तमी की माँ

कहानियों में स्वाभाविक कामेच्छा और उसके दमन के फल स्वरुप उत्पन्न होनेवाले दुष्परिणामों की और संकेत करती है।

यशपाल की कहानियों में विधवा समस्या भी प्रखर रुप से प्रस्तुत हुई है। पति के मृत्यु के बाद नारी को असहाय्य,अपमानित जीवन व्यतित करणा पडता है। समाज में विधुर दुसरी पत्नी कर सकता है लेकिन विधवा नहीं। ''वैष्णवी'' और ''चूँक गई'' कहानी विधवा समस्या को प्रस्तूत करती है। वैष्णवी कहानी में द्रौपदी बाल विधवा बनती है। वह अपनी यौवनावस्था में यौन भावनासे वंचित रहती है। समाज उसे तिरस्कार एवं कुत्सित दृष्टि से देखता है। समाज के दमघुटन वातावरण से मुक्ति पाने के लिए एक पुरुष को अपना लेती है। चुँक गई में आदिश चित्रकार को चाहते हुए भी उसे उपना लेने में असमर्थ है। आदिश वासना की सहज वृत्ति को ठुकराती है और उसकी परिगती निरपेक्ष्य जीवन व्यतीत करने में होती है।

यशपाल की कहानियों में वर्तमान समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत हुआ है। कहानियों के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, वैवाहिक, अनमेल विवाह, विधवा विवाह जैसी ज्वलंत समस्या को वर्णित करने प्रयास किया गया है। इसके साथ-साथ प्रचलित समाज व्यवस्था, धार्मिकता, अंधविश्वास, राजनितिकता पर करारा व्यंग किया है।

संदर्भ

1. आधुनिक हिंदी कहानी मे प्रगती चेतना डॉ . लक्ष्मण दत्त गौतम
2. यशपाल की कहानी कला अनु fवग
3. यशपाल का कथा साहित्य मिश्र
4. यशपाल समग्र मूल्यांकन डॉ. सुनीलकुमार लवटे

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com